ISSN: 2456–5474 RNI No.UPBIL/2016/68367 Vol-3* Issue-3*April- 2018
Innovation The Research Concept

नर्मदा हाईड्रो इलेक्ट्रिक डेवलपमेण्ट कार्पोरेशन लिमिटेड के स्थिति विवरण का मूल्यांकन

सारांश

भारत जैसे विकासशील देश में विद्युत ऊर्जा की मॉग दिन – प्रतिदिन बढ़ती जा रही है। ऊर्जा उत्पादन के लिये विभिन्न प्रकार के स्रोतों का विकास हो रहा है। जिसमें “ **एन एच डी सी लिमिटेड** ” म0प्र0 में विद्युत उत्पादन का एक प्रमुख ऐतिहासिक स्त्रोत है। भूतकाल में इसका नाम **नर्मदा हाईड्रो इलेक्ट्रिक डेवलपमेण्ट कार्पोरेशन था, जो वर्तमान में बदल कर “ नर्मदा हाईड्रो इलेक्ट्रिक डेवलपमेण्ट कार्पोरेशन लिमिटेड ”** हो गया है। एन. एच. डी. सी. लि. कम्पनी इंदिरा सागर पॉवर स्टेशन तथा ओंकारेश्वर पॉवर स्टेशन विद्युत परियोजनाओं के द्वारा विद्युत उत्पादन कर मध्यप्रदेश राज्य में विद्युत की आपूर्ति पूर्ण कर रहा है। यह मध्यप्रदेश की सबसे बड़ी जल विद्युत उत्पादन कम्पनी हे जिसके द्वारा गॉव–गॉव विद्युत ऊर्जा प्रदान की जा रही है ।

नर्मदा हाईडो इलेक्ट्रिक डेवलपमेण्ट कार्पोरेशन लिमिटेड अर्थात एन. एच. डी. सी. लि. स्थापना 01 अगस्त, 2000 को हुई थी। यह परियोजना नेशनल हाईड्रो इलेक्ट्रिक पॉवर कार्पोरेशन लिमिटेड (एन.एच.पी.सी.लि) व मध्यप्रदेश शासन का संयुक्त उद्यम है। इसका मुख्यालय भोपाल (म.प्र.) में स्थित है। प्रारंभ में “एन. एच. डी. सी. लि. को नर्मदा कछार में स्थित इंदिरा सागर, एवं ओंकारेश्वर परियोजनाओं के बांध का कार्य सौंपा गया था। इस प्रदत पूॅजी 1962.58 करोड़ रूपये है। उपरोक्त ऑकड़ों से ज्ञात होता है कि कम्पनी विकास के पथ पर अग्रसर है।

किसी भी संस्थान की उन्नति उसके वित्तीय विश्लेषण एवं लाभदायकता के मूल्याकंन से की जा सकती है। वित्तीय विश्लेषण शब्द सामान्यतः वित्तीय विवरणों के परिक्षण के सन्दर्भ में प्रयोग किया जाता है। यह विश्लेषण कम्पनी की एक बौद्धिक गतिविधि एवं तथ्यों को जानने की एक प्रक्रिया है। यह विश्लेषण एक शोध प्रक्रिया पर निर्धारित होता है, जिसके अंतर्गत वित्तीय उपलब्धियों का मूल्यांकन करना अनिवार्य हो जाता है, चूॅकि जब कोई संस्था रोजगार प्रदान करती है तो उसका वित्तीय मूल्यांकन करना महत्त्वपूर्ण हो जाता है। एन एच डी सी लिमिटेड, उन संस्थाओं में एक है जिसे उक्त शोध कार्य के लिये इकाई का रूप चुना गया है। वित्तीय मूल्यांकन में दर्शायें गये सभी लेखा अभिलेखों में अभिलेखित है।

वित्तीय विवरणों के मूल्यांकन के अभाव में कोई भी महत्वूर्ण निष्कर्ष प्राप्त नहीं किये जा सकते। अतः प्रस्तुत अध्ययन में “एन. एच. डी. सी. लिमिटेड वित्तीय मूल्यांकन”वित्तीय मूल्यांकन को अध्ययन का आधार बनाकर प्रस्तुत किया गया है।

विभा तिवारी
पूर्व शोध छात्रा,
वाणिज्य विभाग,
शासकीय महारानी लक्ष्मीबाई गर्ल्स पी0 जी0 कालेज,
भोपाल, म0 प्र0

मुख्य शब्द : वित्तीय मूल्यांकन, व्यापार एवं उद्योग।

प्रस्तावना

व्यापार एवं उद्योग किसी भी राष्ट्र की प्रगति एवं उन्नति की रीड़ की हड्डी होते है। अतः हम इन्हे मापक यन्त्र भी कह सकते है। विज्ञान की मदद से व्यापार के क्षेत्र में विकास दिन–प्रतिदिन उन्नति हो रहा है। वर्तमान समय में अमेरिका अमीरों के देश में प्रथम स्थान रखता है तो यह श्रेय भी व्यापार एवं उद्योग को ही जाता है। वाणिज्य एवं उद्योग के क्षेत्र में निरंतर वृद्धि होने के कारण लेख–पुस्तकों के महत्व को भी नहीं भुलाया जा सकता। लेखा–पुस्तकों का मुख्य उद्देश्य मात्र दिन–प्रतिदिन के लेन–देन को लिखने तक ही सीमित नहीं है बल्कि इसके आधार पर व्यापार की सफलता का मूल्यांकन भी किया जाता है। वर्तमान में इनका कार्य कम्प्यूटर ने ले लिया है।

आज व्यवसाय का क्षेत्र एकांकी एवं साझेदारी तक ही सीमित नहीं है बल्कि संयुक्त प्रमण्डल तक फैला हुआ है। यही कारण है कि व्यवसाय प्रणाली

के सभी मण्डलों द्वारा लेखों को प्रकाशित किया जाता है, ताकि वर्तमान अंशधारी एवं विनियोगकर्ता मण्डलों की वास्तविक स्थिति से अवगत हो सके मण्डलों द्वारा प्रकाशित विवरण को ही वित्तीय विवरण कहते है। इसी के द्वारा किसी भी कंपनी की स्थिति का विवरण को ही वित्तीय विवरण कहते है। इसी के द्वारा साधारणतया स्थिति विवरण का आशय ऐसे विवरण से है जिससे व्यवसाय से सम्बन्धित वित्तीय सूचनाएं प्राप्त हों किन्तु व्यवहारिक दृष्टिकोण से लाभ–हानि खाता एवं आर्थिक चिट्ठा के सम्मिलित रूप को स्थिति विवरण कहा जाता है। संस्था की बचत–लाभ विवरण तैयार किये जाते है तो इससे कम्पनी की स्थिति का विवरण प्राप्त होता । स्थिति, वित्तीय स्थिति से प्राप्त होती है, जो वित्तीय विवरण से प्राप्त होता है।

शोध के उद्देश्य

1. नर्मदा हाइड्रो इलेक्ट्रिक डेवलपमेण्ट कार्पोरेशन के व्यय खाते का अध्ययन करना।
2. नर्मदा हाइड्रो इलेक्ट्रिक डेवलपमेण्ट कार्पोरेशन के स्थिति विवरण का अध्ययन करना।
3. नर्मदा हाइड्रो इलेक्ट्रिक डेवलपमेण्ट कार्पोरेशन सम्पत्तियों का अध्ययन करना।
4. नर्मदा हाइड्रो इलेक्ट्रिक डेवलपमेण्ट कार्पोरेशन दायित्वों का अध्ययन करना।
5. नर्मदा हाइड्रो इलेक्ट्रिक डेवलपमेण्ट कार्पोरेशन शोध का अध्ययन से प्राप्त निष्कर्ण के आधार पर आवश्यक सुझााव देना।

एन एच डी सी लि कंपनी की स्थिति विवरण का अध्ययन करने के अन्तर्गत कंपनी की बिक्री, आय, लाभ, संपत्ति दायित्व आदि अवयव का बहुत बारीकी से अध्ययन व विश्लेषण किया गया है। इसके अंतर्गत बहुत तरह के निष्कर्ष निकाले गए है जो निम्नलिखित है–

1. कंपनी की बिक्री का विश्लेषण करने पर यह पता चलता है कि उर्जा की बिक्री में लगातार बढ़ोत्तरी हुई है।
2. कंपनी के ऊर्जा उत्पादन में बढ़ोत्तरी हुई है जिसके कारण इससे संबधित खर्चो में बढ़ोत्तरी हुई है ।
3. कंपनी की बिक्री व अन्य आय में लगतार बढ़ोत्तरी होने से कर के पश्चात शुद्ध लाभ में भी वृद्धि हुई है।
4. कंपनी की अधार की राशि में लगतार गिरावट हुई है। जिसका मुख्य कारण उधार की Repayment करना। इससे यह संकेत मिलता है कि कंपनी अपने वित्तीय आवश्यकताओं के लिये बाहरी स्त्रोतों पर ज्यादा निर्भर नहीं है।
5. कंपनी के पास पूरे पॉच वर्षो में शुद्ध स्थायी संपति, चालू पूंजीगत कार्य का अच्छा भंडार है। कंपनी की कार्यशील पूॅजी का ऑकड़ों में थोडी अस्थिरता है जिससे यह संकेत मिलता है कि कंपनी की कार्यशील पूॅजी का प्रबंधन में थोड़ा सुधार होने की आवश्यकता है।
6. कंपनी की वित्तीय स्थिति को और जानने के लिये कुछ अनुपातों की गणना व विश्लेषण किया गया है यह अनुपात निम्नलिखित है। सकल पूॅजी पर लाभ से यह पता चलता है कि कंपनी कल लाभप्रदता में अस्थिरता है, सकल पूॅजी और बिक्री के अनुपात में यह देखने को बिक्री के अनुपात के आंकलन करने पर पता चलता है कि कंपनी की लागत नियंत्रण व परिचालन क्षमता में सुधार हुआ है। कुल मिलाकर एन. एच. डी. सी. की पूरी वित्तीय स्थिति का आंकलन किया जाए तो यह निष्कर्ष निकलता है कि कंपनी की लाभप्रदत्ता, तरलता, कार्यशील पूॅजी व संपत्तियों के प्रबंधन में इन पॉच वर्षो में सुधार हुआ है और कंपनी इसी तरह और सुधार करेगी तो आने वाले वर्षो में यह प्रगति के नए शिखर को छू पाएगी ।

सकल पूंजी पर लाभ

इस अनुपात को निवेश या समग्र लाभप्रदता अनुपात पर वापसी के रूप में भी जाना जाता है। कार्यरत अवधि के पूंजीगत शेयर पूंजी भंडार और अधिवेश ऋण निधि शून्य से गैर व्यापार संपत्ति और फर्जी परिसंपत्तियों जिसमें व्यापार में कार्यरत लंबी अवधि के फंड के कुल योग को दर्शाता है।

इस अनुपात के कारोबार में कार्यरत कुल पूंजी पर प्रतिशत वापसी के उपाय उच्च अनुपात अधिक कुशल नियोजित पूंजी का इस्तेमाल होता है।

इसकी गणना कार्यरत सकल पूंजी द्वारा सकल लाभ विभाजित की जाती है।

सूत्र= सकल पूंजी लाभ–(सकल लाभसकल पूंजी) X 100

बिक्री और सकल पूंजी का अनुपात

यह अनुपात के प्रबंध और अपनी संपत्ति के उपयोग में एक फर्म की दक्षता को मापता है। यह फर्म में कार्यरत बिक्री और पूंजी के बीच के रिश्ते पर आधारित है। पूंजीगत टर्नओवर अनुपात के रूप में जाना जाता है।

सूत्र = (बिक्री / सकल पूंजी) X 100

उधार और शेयर पूंजी का अनुपात

यह अनुपात के कंपनी की वित्तीय शोधन क्षमता को जानने का एक अच्छा मापदंड है। स्वामी की पूंजी और उधार ली गई रकम के बीच के संबंध को जानने के द्वारा उधार और शेयर पूंजी का अनुपात फर्म की संपत्ति के वित्तपोषण में ऋण और इक्विटी के सापेक्ष अनुपात को दर्शाता है। इस अनुपात के जरिये यह पता लगाया जा सकता है कि कंपनी अस्तित्व के लिए बाहरी लोगों पर कितना निर्भर करती है ।

सूत्र = (उधार / शेयर पूंजी)

लाभ और विक्रय का अनुपात

यह अनुपात शुद्ध लाभ और बिक्री के बीच के संबंध को दर्शाता है। यह प्रतिशत के रूप में मापा जाता है। इस अनुपात के लिए कर के पश्चात शुद्ध लाभ को लिया जाता है। शुद्ध लाभ सकल लाभ से प्रशासनिक व्यय विक्रय संबंधी व्यय और वित्तीय खर्चो को घटाने के बाद आता है। यह अनुपात कंपनी की कुल परिचालन दक्षता को दर्शाता है। अगर अनुपात ज्यादा होगा तो कंपनी की लगात नियंत्रण और परिचालन क्षमता भी बेहतर होगी।

सूत्र= (शुद्ध लाभ / कुल बिक्री) X 100

शुद्ध मूल्य पर लाभ

यह अनुपात इक्विटी शेयर धारकों के लिए वापसी की दर के मामले में एक कंपनी के मुनाफे को व्यक्त करता है। वास्तव में अन्य कंपनियों के अनुपात के साथ इस अनुपात की तुलना करके यह सुनिश्चित किया जाता है। कि फर्म अपनी इक्विटी शेयरधारकों के लिए संतोषजनक मुनाफा अर्जित कर रहा है कि नहीं। इस अनुपात के लिए कर के पश्चात् शुद्ध लाभ को लिया जाता है।

सूत्र = (शुद्ध लाभ / शुद्ध मूल्य) X 100

परिकल्पना की कसौटी

ंएन.एच.डी.सी.लि. की वित्तीय स्थिति का विस्तृत अध्ययन किया तथा परिकल्पना की जॉच हेतु कप्पनी की 5 वर्षो की बिक्री के डेटा को लिया गया है तथा उसका औसत वार्षिक प्रतिशत वृद्धि दर की गणना निम्न सूत्र द्वारा की गयी है।

$$\{\text{Antiolog} \left(\frac{\log m - \log n}{N} \right) - 1\} \times 100$$

जिसके अतंर्गत

log m = चालू वर्ष की बिक्री का log

log n = गत वर्ष की बिक्री का log

N= वर्षो का अंतर

सन्दर्भ गंथ सूची

1. *Agrawal N.K. Management of Working capital. New Delhi, 1986*
2. *Bhatt V.V. Structure of financial institution Vora and co. Bombay ed.1972*
3. *Battly, J.,Management Accounting, (London: M.C Donald And Evans) ,1975*
4. *Gupta R.L. financial Statement analysis sultan chand & Sons. New Delhi. Ed.1990.*
5. *Gersten Berg C.W. financial Organization and Management Asia Publishing house New Delhi Ed.1962*
6. *अग्रवाल एम.डी.अग्रवाल एन.पी. वित्तिय प्रबंध रमेश बुक डिपो. जयपुर,2000*
7. *कुलश्रेष्ठ आर.एस.राठी ए.एम.वित्तीय प्रबंध साहित्य भवन, नई दिल्ली,2005*
8. *गुप्ता एस.पी.एवं अग्रवाल वी.एम–एडवान्स एकाउंट्स शिवलाल अग्रवाल एड कंपनी इन्दौर 1994.*
9. *जैन.पी.के कंपनी लेख, नवयुग साहित्य भवन, आगरा 1993.*
10. *शुक्ला एस.एम.वित्तीय लेखांकन साहित्य भवन आगरा 1988.*
11. *शुक्ला एस.एम.कंपनी लेखे, साहित्य भवन आगरा 1993*
12. *चन्द्र भान रावत– शोध प्रविधि और प्रक्रिया*

विभागीय प्रतिवेदन, पत्रिकाएँ तथा वेबसाइट

नर्मदा हाईड्रो इलेक्ट्रिक डेवलपमेण्ट कार्पोरेशन की पत्रिकाएं

13. *आरोहरण*
14. *जागृति*
15. *नर्मदा हाईड्रो इलेक्ट्रिक डेवलपमेण्ट कार्पोरेशन का वार्षिक प्रतिवेदन*

अन्य शासकीय प्रकाशन, प्रतिवेदन एवं पत्र–पत्रकाएं

16. *www.nhdcindia.com*
17. *www.ncpcindia.com*
18. *www.powermin.nic.in*
19. *www.mhre.gov.ws*
20. *www.nvda.mp.gov.in*